ज़िंदादिली और उल्लास के हरकारे

'रेल दर्पण' के पिछले अंक से हमने यह नया स्तम्भ ''जिंदादिली और उल्लास के हरकारे'' शुरु किया, जिसे काफी सराहा गया है। इस स्तम्भ के अंतर्गत हम अपने पाठकों का परिचय पश्चिम रेल परिवार के कुछ ऐसे ज़िंदादिल इंसानों से करवाते है, जो अपने कलात्मक हुनर, मिलनसार व्यवहार और अंतर्मन में बसे उल्लास की निरंतर अभिव्यक्ति से ने सिर्फ अपना और अपने संगठन का नाम रोशन करते हैं, बल्कि अपनी उपलब्धियों अपने सहकर्मियों और परिजनों के लिए ज़िंदादिली और उत्साह का प्रेरणा स्त्रोत भी बनते हैं। ऐसे 4 जोशीले हरकारों का सचित्र परिचय इस प्रेरणादायी स्तम्भ की दूसरी कड़ी मे हम पेश कर रहे हैं। अगर आपके विभाग, मंडल या कार्यालय में अथवा आपके परिचित रेलकर्मियों के परिवारजनों में भी ऐसे हरकारे मौजूद हों, तो आप उनका सचित्र परिचय हमारे वरिष्ठ कार्यकारी सम्पादक श्री गजानन महतपुरकर को प्रेषित कर सकते हैं। योग्य पाये जाने पर उनका प्रकाशन 'रेल दर्पण' के अगले अंक में इस स्तम्भ की अगली कड़ी के अंतर्गत किया जा सकेगा।

✍ **प्रधान सम्पादक**

सुमधुर है उन की मुरली की तान-श्री अनिल कुमार हैं बेहद प्रतिभावान !

पेशा उनका है फाइलों पर कलम चलाना, मगर कलम थामने वाली उनकी अंगुलियाँ जब बाँसुरी पर थिरकती हैं,तो संगीत का ऐसा जादू जगाती हैं। कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। ऐसे सुरीले व्यक्तित्व के धनी श्री अनिल कुमार अत्यंत प्रतिभावान मुरली वादक हैं। पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय में सिगनल एवं दूरसंचार विभाग में कनिष्ठ लिपिक के पद पर कार्यरत श्री अनिल कुमार भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में युवा बाँसुरी वादक के तौर पर विख्यात हैं। अपने मामा के वादन से प्रभावित होकर अनिल जी ने बाँसुरी की प्रारम्भिक शिक्षा लेना शुरू किया। तत्पश्चात बिहार के प्रसिद्ध बाँसुरी वादक उस्ताद मुज्तबा हुसैन से शिक्षा ग्रहण की। गाय की पद्धति का प्रशिक्षण आपने इलाहाबाद के पं. रघुनाथ प्रसन्न एवं स्व. पं. भोलानाथ प्रसन्न से प्राप्त किया, परंतु वास्तविक शिक्षा अथवा मुरली की बारीकियाँ, रागदारी एवं लयकारी की शिक्षा आपने गुरु-शिष्य के परम्परा अंतर्गत वाराणसी घराने के श्रेष्ठ मुरली वादक पं. राजेन्द्र प्रसन्न से प्राप्त की जो अब भी जारी है। श्री अनिल वर्तमान मे विश्वविख्यात बाँसुरी वादक पं. हरि प्रसाद चौरसिया के मार्गदशन में अपना सुरीला मुरली वादक सीख रहे हैं एवं प्रस्तुति भी दे रहे हैं। अनिल जी जब राग एवं ताल में उनकी मधुर बंसी द्वारा बेजोड़ माधुर्य एवं रस प्रवाहित करते है, तो मन मंत्रमुग्ध हो जाता है। आप वाराणसी घराने के आलाप और तान का बहुत ही सरस प्रस्तुतीकरण करते हैं, आपकी मधुर व सुरीली फूँक का कमाल आपकी उत्तम तैयारी को दर्शाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा हेतु आपको राष्ट्रीय छात्रवृति भी प्राप्त हुई है। 1998 में ऑल इंडिया रेडियो की संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, 2006 मे राष्ट्रीय युवा उत्सव में स्वर्णपदक, चंडीगढ़ युनिवर्सिटी से संगीत भास्कर में स्वर्ण पदक तथा रतलाम में उत्तर रेलवे संगीत प्रतियोगिता में आपने प्रथम स्थान प्राप्त किया। देश के कई प्रतिष्ठित समारोहों जैसे उज्जैन समारोह, नई दिल्ली के स्वामी गंधर्व संगीत समारोह, वाराणसी के मल्हार उत्सव, राजगीर के राजगीर महोत्सव, कालीदास तथा वैशाली के वैशाली महोत्सव सहित देश के कई स्थानों पर आप अपना एकल श्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण कर चुके हैं। आपने ऑल इंडिया रेडियो, दूरदर्शन, नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (दिल्ली) तथा बहुत से टीवी धारावाहिकों और संगीत कम्पनियों के लिए बाँसुरी वादन किया है। आपने कथक नृत्य सम्राट पं. बिरजू महाराज, पं. राजेन्द्र गंगानी, ग़ज़ल गायकों अमजद हुसैन-मोहम्मद हुसैन, राजेन्द्र मेहता-नीना मेहता, शास्त्रीय गायक पं. छन्नू लाल मिश्रा, बांग्ला लोक गायक पूरन दास भोजपुरी गायक मनोज तिवारी, शारदा सिन्हा, कल्पना इत्यादि दिग्गज कलाकारों के साथ उत्तम प्रस्तुति की है। 'रेल दर्पण' परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

पेशे से रेलवे इंजीनियर, कलम से कुशल लेखक -श्री विमलेश चन्द्र

पश्चिम रेलवे के भावनगर परा मंडल कार्यालय में सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर के पद पर कार्यरत श्री विमलेश चन्द्र, भारतीय रेल परिवार के उन गिने-चुने लेखकों में से एक हैं, जो विभिन्न विषयों पर नियमित रूप लिखते और छपते हैं। राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भारतीय रेल, विश्व रेल, विज्ञान तकनीक, साहित्य, सामान्य ज्ञान एवं सामाजिक विषयों पर इनके अब तक लगभग तीन सौ लेख प्रकाशित हो चुके हैं, वहीं इनके द्वारा लिखित पुस्तक 'भारतीय रेल एक परिचय' रेलवे बोर्ड द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है। भारत सरकार की सबसे बड़ी विज्ञान संस्था सी.एस. आई. आर. द्वारा जहाँ इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो चुका है, वहीं पश्चिम रेलवे के मंडल स्तर पर भी कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। भारतीय रेल की पत्रिका 'भारतीय रेल', पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' तथा राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका विज्ञान प्रगति सहित विभिन्न पत्रिकाओं में इनके लेखों को नियमित पढ़ा जा सकता है। इनके पास जहाँ भारतीय रेल तथा विश्व रेल से सम्बंधित कई दर्जन पुस्तकें संग्रहित हैं, वहीं विभिन्न क्षेत्रों की लगभग बीस हजार पत्र-पत्रिकाएँ भी संग्रहित हैं। वर्ष 1979-80 से अब तक भारतीय रेल, इंडियन रेलवेज, क्रिकेट भारती, क्रिकेट टुडे, रेल राजभाषा, जैसी अनेक पत्रिकाओं के सभी अंक इनके पास मौजूद हैं। भारतीय रेलवे की अज्ञात एवं आश्चर्यजनक विशेषताओं तथा रेलों के इतिहास पर खोजपरक लेख लिखने में इनकी विशेष रुचि है। इनकी सृजनधर्मिता पर 'रेल दर्पण' की ओर से इनका हार्दिक अभिनंदन एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ!

सांस्कृतिक परम्पराओं की संरक्षिका-श्रीमती वृषाली जोशी

लगातार भागदौड़ और आपाधापी वाली व्यस्त दिनचर्या वाले मुंबई महानगर की तमाम कामकाजी महिलाएँ भी अक्सर इतनी व्यस्त रहती हैं कि उन्हें पारम्परिक त्यौहार और उत्सव सही ढ़ंग से मनाकर भारतीय संस्कृति का अनुपालन करने की फुर्सत ही नहीं मिलती है। इसलिये मुंबई की अधिकांश महिलाएँ कई प्रमुख उत्सव या तो लेडीज स्पेशल ट्रेन में अपने दैनिक सफ़र के दौरान या फिर अपने कार्यस्थल पर मनाती हैं। ऐसी ही उत्सव धर्मिता की शानदार मशाल जलाये रखकर एक अनुकरणीय मिसाल पेश करने वाली कामकाजी रेलकर्मी हैं श्रीमती वृषाली जोशी, जो पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय के भंडार विभाग में मुख्य कार्यालय अधीक्षक (प्रशासन) के जिम्मेदारी पूर्ण पद पर कार्यरत हैं। 8 दिसम्बर, 1971 को रेल सेवा में प्रवेश करने वाली 59 वर्षीया श्रीमती जोशी इसी वर्ष सेवानिवृत्त होने वाली हैं, लेकिन उत्सवधर्मिता के प्रति उनका उल्लास और ज़िंदादिली यथावत बरकरार है। लगभग 12 वर्षों तक पश्चिम रेलवे एम्पलॉईज यूनियन की सक्रिय कार्यकर्ता रहीं। श्रीमती जोशी का जज़्बा और सपना 1986 में रंग लाया, जब पश्चिम रेलवे के भंडार विभाग की कुछ महिला रेलकर्मियों ने मिल-जुल कर मकर संक्रांति पर्व तिळगुळ समारम्भ के रूप में मनाने की शुरुआत की। बकौल श्रीमती जोशी, पिछले 25 वर्षों से भंडार विभाग की लगभग 150 महिला रेलकर्मियों द्वारा इस सांस्कृतिक पर्व को धूमधाम से मनाये जाने का सिलसिला लगातार जारी है। इसके अंतर्गत सभी महिलाएँ संयुक्त रूप से एक निश्चित धन राशि एकत्रित करके किसी निर्धारित दिन दोपहर एक से दो बजे के बीच में हल्दी-कुमकुम समारोह का आयोजन करती हैं, जिनमें श्रीमती जोशी की प्रमुख भूमिका रहती है। इन महिलाओं के समूह द्वारा भारतीय संस्कृति के एक अन्य प्रमुख उत्सव नवरात्रि को मनाना भी 6 वर्षों पहले शुरू किया गया, जिसका सिलसिला भी निरंतर जारी है। इस उत्सव के अंतर्गत भंडार विभाग की सभी महिलाएँ भोजन अवकाश के दौरान माँ दुर्गा की आरती करते हुए गरबा खेलती हैं और पूरे दस दिनों तक देवी माँ के सामने अखंड ज्योति जलाती हैं। खास बात यह है कि इन दोनों उत्सवों में चपरासी से लेकर उच्चतम अधिकारी के पद पर तैनात सभी रेलकर्मी महिलाएँ समान उल्लास और आस्था के साथ शामिल होती हैं तथा निष्ठापूर्वक काम के साथ-साथ त्यौहारों का भी जश्न मनाते हुए ज़िंदादिली की मशाल को जलाये रखती हैं। इन सभी महिलाओं को एक सूत्र में पिरोकर सांस्कृतिक परम्पराओं के संरक्षण का उल्लेखनीय कार्य करने वाली श्रीमती वृषाली जोशी का उल्लास पूर्ण व्यक्तित्व निश्चित रूप से काबिले तारीफ है।

राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित होनहार बालक-रोमिल शाह

कहते हैं किशोरावस्था व्यक्ति के भावी जीवन की आधारशिला होती है और इस उम्र में अगर सही दिशा और मार्गदर्शन मिल जाये, तो बड़ा होकर व्यक्ति निश्चित रूप से एक सफल इंसान बनता है। मगर यदि कोई बच्चा अपने बचपन में ही कामयाबी की बुलंदियों को छू ले, तो उसके अभिभावक गर्व से फूले नहीं समाते हैं। ऐसा ही सुनहरा अवसर पश्चिम रेलवे के भावनगर परा मंडल कार्यालय के वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक कार्यालय में लेखा सहायक के पद पर कार्यरत श्री केतन एस. शाह के जीवन में आया, जब उनके होनहार बेटे मास्टर रोमिल शाह को महामहिम राष्ट्रपति महोदया द्वारा वर्ष 2010 के राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार बहुमुखी प्रतिभा के धनी रोमिल को विभिन्न क्षेत्रों में उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए 14 नवम्बर, 2010 को बाल दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल द्वारा प्रदान किया गया। गुजरात प्रदेश से यह महत्त्वपूर्ण पुरस्कार पाने वाला रोमिल एक मात्र बालक है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष बाल दिवस के अवसर पर ऐसे बच्चों को दिया जाता है, जिन्होंने पढ़ाई, सांस्कृतिक गतिविधियों, कला, क्षेत्रों में अपने विलक्षण असाधारण प्रतिभा के ज़रिये उपलब्धियाँ हासिल की हों। रोमिल का चयन इस पुरस्कार के लिए खेलकूद, विज्ञान, संगीत और पढ़ाई के क्षेत्रों में उसकी विलक्षण प्रतिभा और उल्लेखनीय कामयाबी के आधार पर किया गया। रोमिल ने 'मेंटल अर्थमेटिक

★ महामहिम राष्ट्रपति महोदया से राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्राप्त करते हुए रोमिल शाह।

(ALOHA)' प्रतियोगिता में 'ग्रांड मास्टर' का खिताब हासिल करने के साथ-साथ बृहद् गुजरात संगीत समिति, अहमदाबाद द्वारा आयोजित हारमोनियम की 'उपांत्य विशारद' परीक्षा में मात्र 13 वर्ष की उम्र में 66% अंक अर्जित कर उल्लेखनीय कामयाबी हासिल की। इनके अलावा एक्सेल क्रोप केयर लिमिटेड, भावनगर द्वारा आयोजित स्वर वाद्य वादन प्रतियोगिता में रोमिल ने प्रथम पुरस्कार पाया, वहीं पश्चिम रेलवे द्वारा राजकोट में आयोजित अंतर मंडलीय संगीत प्रतियोगिता में उसे दूसरा पुरस्कार मिला। पढ़ाई के क्षेत्र में भी रोमिल हमेशा अव्वल रहा है और प्राइमरी कक्षाओं की परीक्षाओं में उसे हमेशा 98% अंक मिलते रहे हैं। एच.डी.एफ.सी. द्वारा दी जाने वाली मेरिट स्कॉलरशिप में सिल्वर लेवल तक पहुँचने के अलावा रोमिल ने गुजरात साइंस ओलम्पियाड, सौराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति-राजकोट, जैन श्वेताम्बर एजुकेशन बोर्ड-मुंबई एवं भारतीय सांस्कृतिक ज्ञान केंद्र- हरिद्वार सहित विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा आयोजित विज्ञान, चित्रकला, सामान्य ज्ञान तथा संगीत परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में भी कई उच्च स्तरीय पुरस्कार हासिल किये। राष्ट्रीय बाल पुरस्कार मिलने पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी रोमिल और उसके अभिभावकों का हार्दिक अभिनंदन किया। रोमिल ने यह प्रतिष्ठित उपलब्धि हासिल कर न सिर्फ गुजरात प्रदेश, भावनगर और जैन समाज को गौरवान्वित किया है, बल्कि एक रेलकर्मी परिवार के होनहार बालक के रूप में पश्चिम रेलवे की गरिमा भी बढ़ाई है। 'रेल दर्पण' परिवार की ओर से रोमिल को हार्दिक बधाई।

★प्रस्तुति: **श्रीमती पूजा पवार**, कार्यालय अधीक्षक, परिचालन विभाग, चर्चगेट